वर्षः 3, अंकः 4
मई-अक्टूबर, 2021
मई, 2021 में प्रकाशित।

कविता बिहान

सृजन चिंतन का नया पक्ष

जो इस पागलपन में शामिल नहीं होंगे, मारे जाएँगे

कटघरे में खड़े कर दिये जाएँगे
जो विरोध में बोलेंगे
जो सच-सच बोलेंगे, मारे जाएँगे

बर्दाश्त नहीं किया जाएगा कि किसी की कमीज हो
'उनकी' कमीज से ज्यादा सफ़ेद
कमीज पर जिनके दाग नहीं होंगे, मारे जाएँगे

धकेल दिये जाएँगे कला की दुनिया से बाहर
जो चारण नहीं
जो गुन नहीं गाएँगे, मारे जाएँगे

धर्म की ध्वजा उठाए जो नहीं जाएँगे जुलूस में
गोलियाँ भून डालेंगी उन्हें, काफिर करार दिये जाएँगे

सबसे बड़ा अपराध है इस समय निहत्थे और निरपराध होना
जो अपराधी नहीं होंगे, मारे जाएँगे।

राजेश जोशी–'मारे जाएँगे'

प्रधान संपादक
नलिन रंजन सिंह

संपादक
ज्ञान प्रकाश चौबे

समय की आलोचनात्क शिनाख्त से रचनात्मक प्रतिरोध गढ़ता काव्य

संजय राय

समकालीन हिंदी कविता के आठवें दशक की कविता को पहचान दिलाने में राजेश जोशी की महत्वपूर्ण भूमिका है। राजेश जोशी की रचनाशीलता के कई आयाम हैं। वे आठवें दशक की कविता को एक कवि के रूप में तो समृद्ध करते ही हैं, उसे स्थापित करने में उनकी आलोचना की भी एक महत्वपूर्ण अग्रणी भूमिका रही है। यानी उनके कवि व्यक्तित्व ने एक तरफ हिंदी कविता की रचनात्मकता को समृद्ध किया, दूसरी तरफ उनके आलोचकीय व्यक्तित्व ने आठवें दशक की कविता को एक सैद्धांतिक आधार भी प्रदान किया। आठवाँ दशक दरअसल कई विरोधी विचारों, परिस्थितियों और रचनात्मक विरोधाभासों का समय था। राजेश जोशी इन रचनात्मक विरोधाभासों को रेखांकित करते हुए लिखते हैं, 'एक ओर उस दौर की कविताओं का आक्रामक स्वर था और दूसरी ओर मुक्तिबोध की लंबी कविताओं की फंतासी का जादू।'[1] नक्सल आंदोलन के प्रभाव में उस दौर में कविताएँ लिखी जा रही थीं। इस आंदोलन के प्रभाव में कविता में एक आक्रामकता आ गई थी। आक्रोश उस दौर की कविता की पहचान बन गया था। आक्रोश की उस कविता में समाज और जीवन सिरे से ग़ायब थे। इसलिए अक्सर 'रोमानी आक्रोश' कहकर उसकी आलोचना भी की जाती रही है। राजेश जोशी और आठवें दशक के तमाम कवि जब लिखना सीख रहे थे, तब मुक्तिबोध को नए सिरे से आविष्कृत किया जाने लगा था। भोपाल में रहने के कारण उनपर मुक्तिबोध की कविताओं की फंतासी का जादुई असर होने लगा था। इन्हीं परिस्थितियों के बीच आठवें दशक के कवि अपनी ज़मीन तलाश रहे थे। वह दौर तमाम काव्यांदोलनों के संघात का भी दौर था। नई कविता के बाद उसके खिलाफ और कई बार उसके प्रभाव में भी छोटे—मोटे तमाम आंदोलन कविता में खड़े होने की कोशिश कर रहे थे। इसी के बीच आठवें दशक की कविता अपना रूप गढ़ रही थी। राजेश जोशी ने लिखा है, 'आठवें दशक की कविता वस्तुतः कई एक दूसरे से विपरीत काव्य आंदोलनों की द्वंद्वात्मक प्रक्रिया का परिणाम है।'[2] स्पष्ट है कि राजेश जोशी इन्हीं परिस्थितियों के बीच अपना काव्य विवेक अर्जित कर रहे थे इसलिए उनके यहाँ आक्रोश और आक्रामकता के बजाय जीवन और समाज की स्थितियाँ तथा पेड़, परिंदे, पानी और चाँद के किस्से फंतासी और जादू की शक्ल में दर्ज हुए हैं।

राजेश जोशी की रचनात्मकता के कई रूप मिलते हैं। कवि के रूप में तो उनकी एक बड़ी पहचान है ही कहनीकार, नाटककार, आलोचक, पटकथा लेखक के रूप में भी उनकी रचनात्मकता